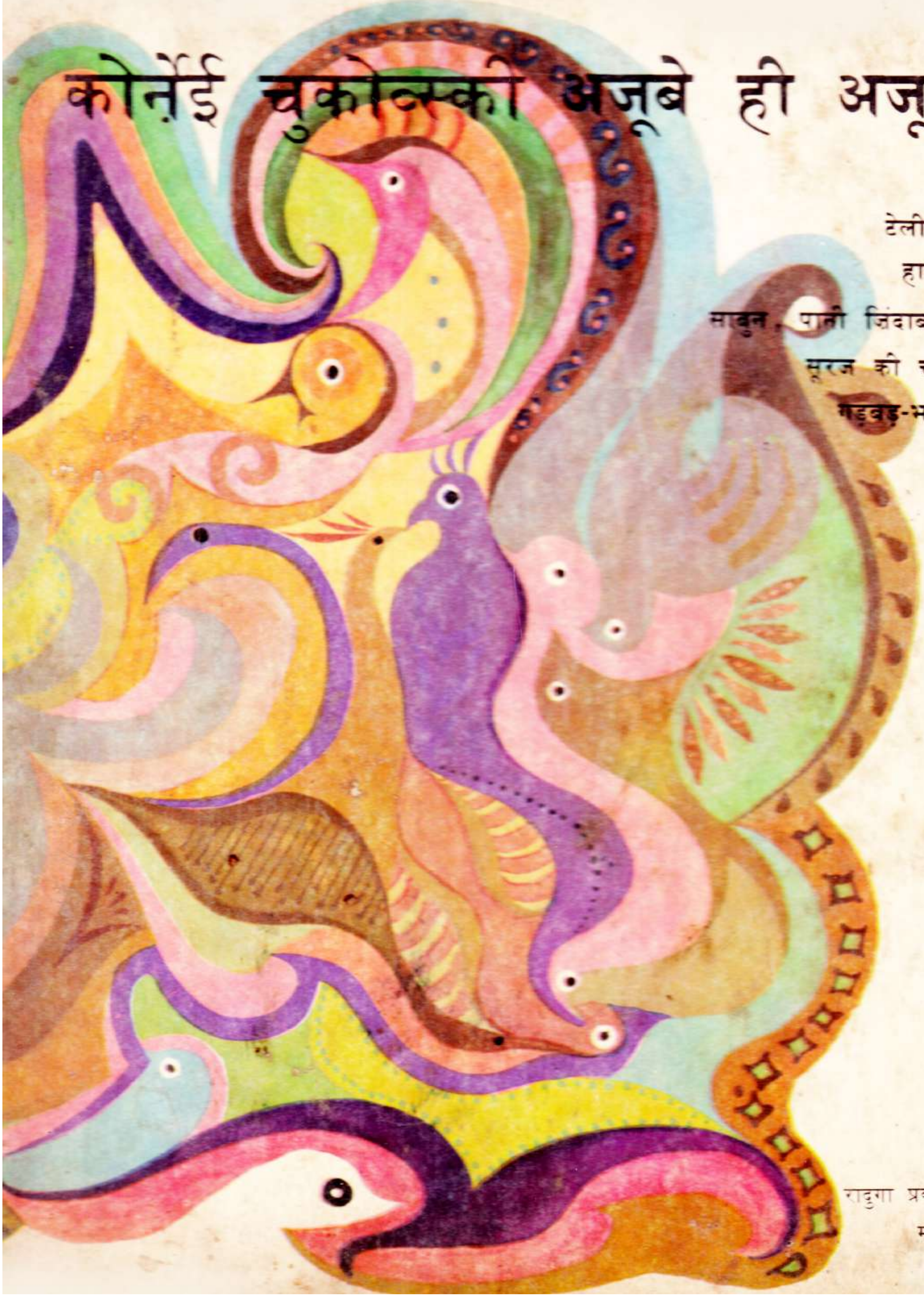
कोर्नेई चुकोव्स्की

अजूबे ही अजूबे



रादुगा प्रकाशन
मास्को

कोर्नेई चुकोव्स्की



अजूबे ही अजूबे



मास्को रादुगा प्रकाशन १६८३

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५

К. Чуковский
СКАЗКИ
На хинди

K. Chukovsky
WONDER TALES
in Hindi

सोवियत संघ में मुद्रित

प $\frac{4803010102-244}{031/01/-83}$ 384-83



अनुक्रम

टेलीफ़ोन

घण्टी टेलीफ़ोन की मेरे बज उठी :
– कौन बोलता ?
– मैं हाथी।
– बोलते कहां से ?
– ऊंट के यहां से।
– क्या दरकार ?
– चाकलेट, सरकार।
– किसके लिए ?
– बेटे के लिए।
– बहुत चाहिए ?
– एक टन भिजवाइये,




अधिक नहीं, खा पायेगा,
छोटा है, पेट फूल जायेगा!



२

इसके बाद टेलीफ़ोन आया घड़ियाल का –
उसका बुरा हाल था,
वह अनुरोध करे रो कर:

– इतनी दया करो मुझ पर,
कुछ जूते भिजवाओ, प्यारे,
मुझको, बीवी, तोतोशा को
हम सबके तो तुम्हीं सहारे।





– लेकिन मैंने पिछले हफ़्ते
दो बढ़िया जोड़े भिजवाये,
उनका भला किया क्या तुमने
नहीं समझ में मेरी आये?

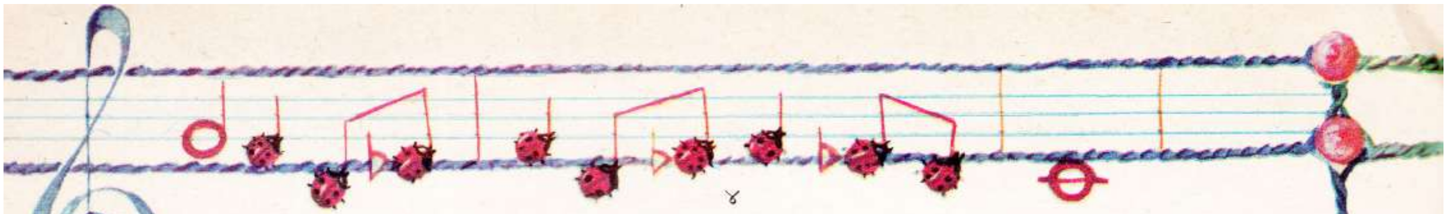
– जो पिछले हफ़्ते भिजवाये
ओह, वे हमने कब के खाये,
इन्तज़ार अब हम करते हैं,
राह हर घड़ी हम तकते हैं,
फिर से भिजवाओगे किस क्षण
नये और मीठे जूतों के जोड़े, दर्जन!

३

नन्हे-मुन्ने ख़रगोशों ने फ़ोन किया:
– कुछ दस्ताने भिजवा दो हमको भैया।

घण्टी फिर से बजी, कहें बन्दर हेलो:
– कृपया हमें किताबें कुछ तुम भिजवा दो!





इसके बाद किया भालू ने टेलीफ़ोन
ज़ोर-ज़ोर से रोये, उसको समझे कौन?

– भालू प्यारे, रुको, न यों रोते जाओ।
तुम्हें चाहिए क्या? यह मुझको बतलाओ।

लेकिन वह बेहाल हो रहा था रो, रो,
ऐसा क्या था दुख उसको
नहीं बताया कुछ मुझको!

– कृपया तुम चोंगा नीचे रख दो!







५

फ़ोन तभी बगुलों का आया –
मेढक खा-खा पेट फुलाया,
जान दर्द से निकल रही है
दवा भेज दो, अर्ज़ यही है।

६

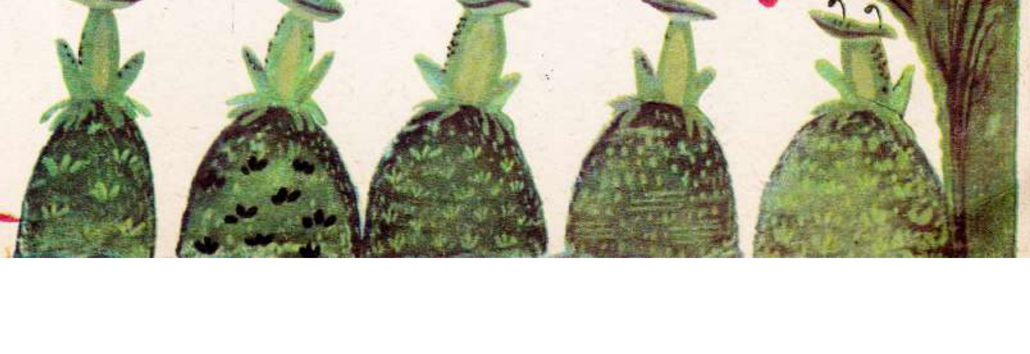
फ़ोन आ गया अब सूअर का :
– तुम्हें ज़रूरत है बोलो, क्या ?
– आज इधर भिजवा दो बुलबुल।
हम दोनों गायेंगे हिल-मिल
गीत मधुर
हम मिल कर।

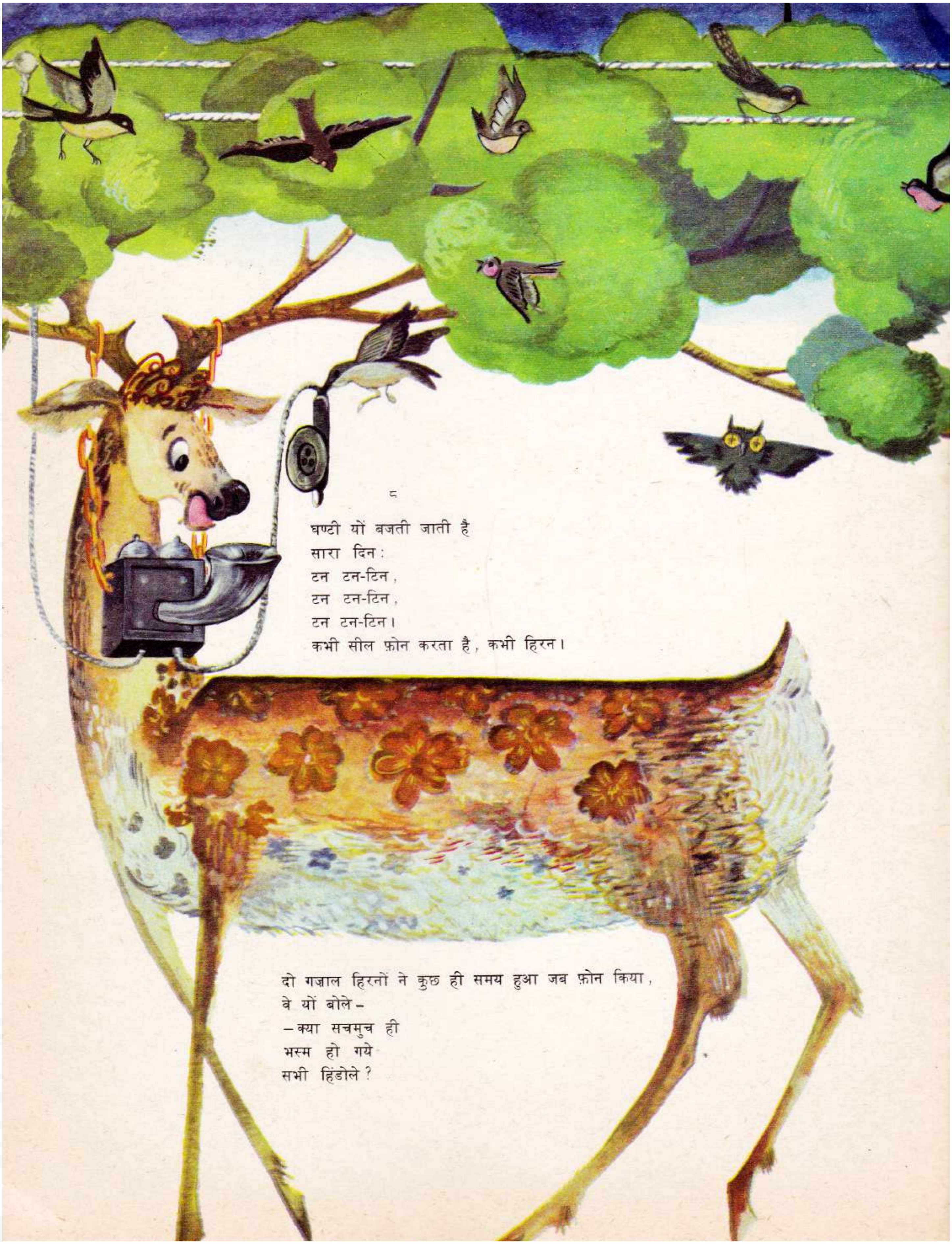
– बुलबुल कभी नहीं गाती है,
जी, वह तो सूअर की खातिर !
तुम तो कौवे को पुकार लो, होगा बेहतर !

७

भालू ने फिर फ़ोन किया :
– हाय, वालरस की लो आकर जान बचा !
वह समुद्र की साही को कल हड़प गया !

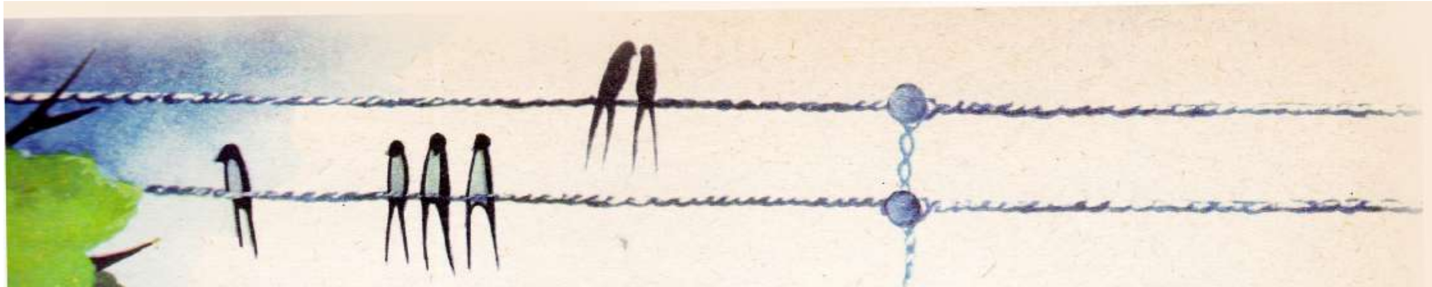






घण्टी यों बजती जाती है
सारा दिन :
टन टन-टिन,
टन टन-टिन,
टन टन-टिन।
कभी सील फ़ोन करता है, कभी हिरन।

दो गज़ाल हिरनों ने कुछ ही समय हुआ जब फ़ोन किया,
वे यों बोले–
–क्या सचमुच ही
भस्म हो गये
सभी हिंडोले ?





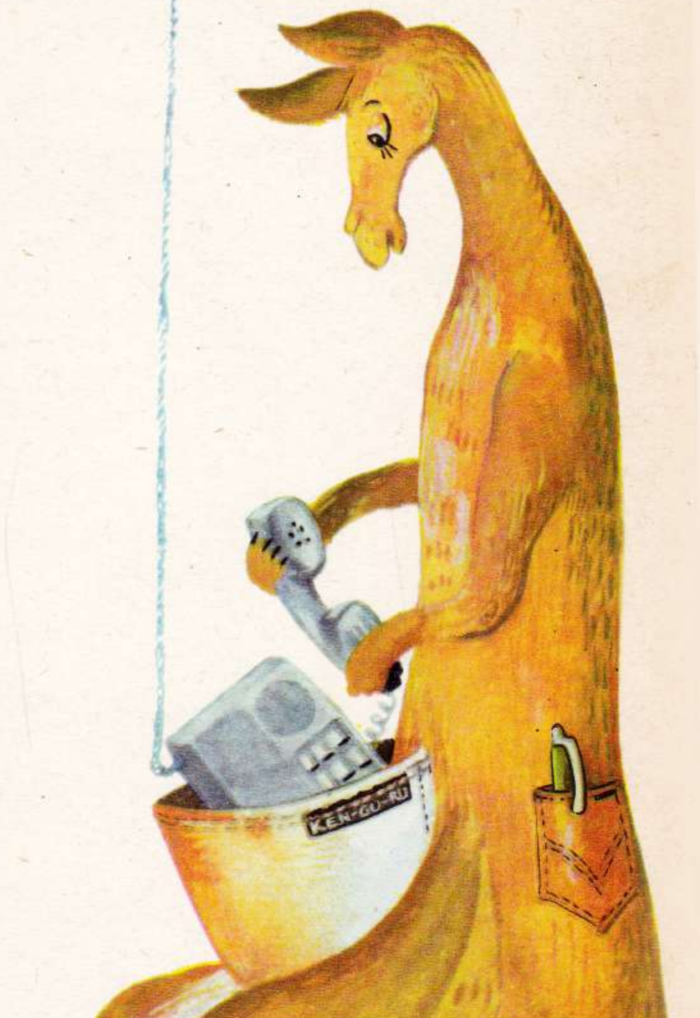
–रे गज़ाल, तुम क्या कहते हो?
किस दुनिया में तुम रहते हो?
सही-सलामत सभी हिंडोले,
झूले, छोटे उड़न-खटोले,
यों ही तुम मत शोर मचाओ
बस, अगले हफ़्ते आ जाओ,
तुम जी भरकर झूलो झूले,
झुलो झूले, तुम हिंडोले!

बात न लेकिन वे तो सुनते,
रट अपनी ही वे तो रटते,
फिर से बोले–
–क्या सचमुच ही
भस्म हो गये
सभी हिंडोले?

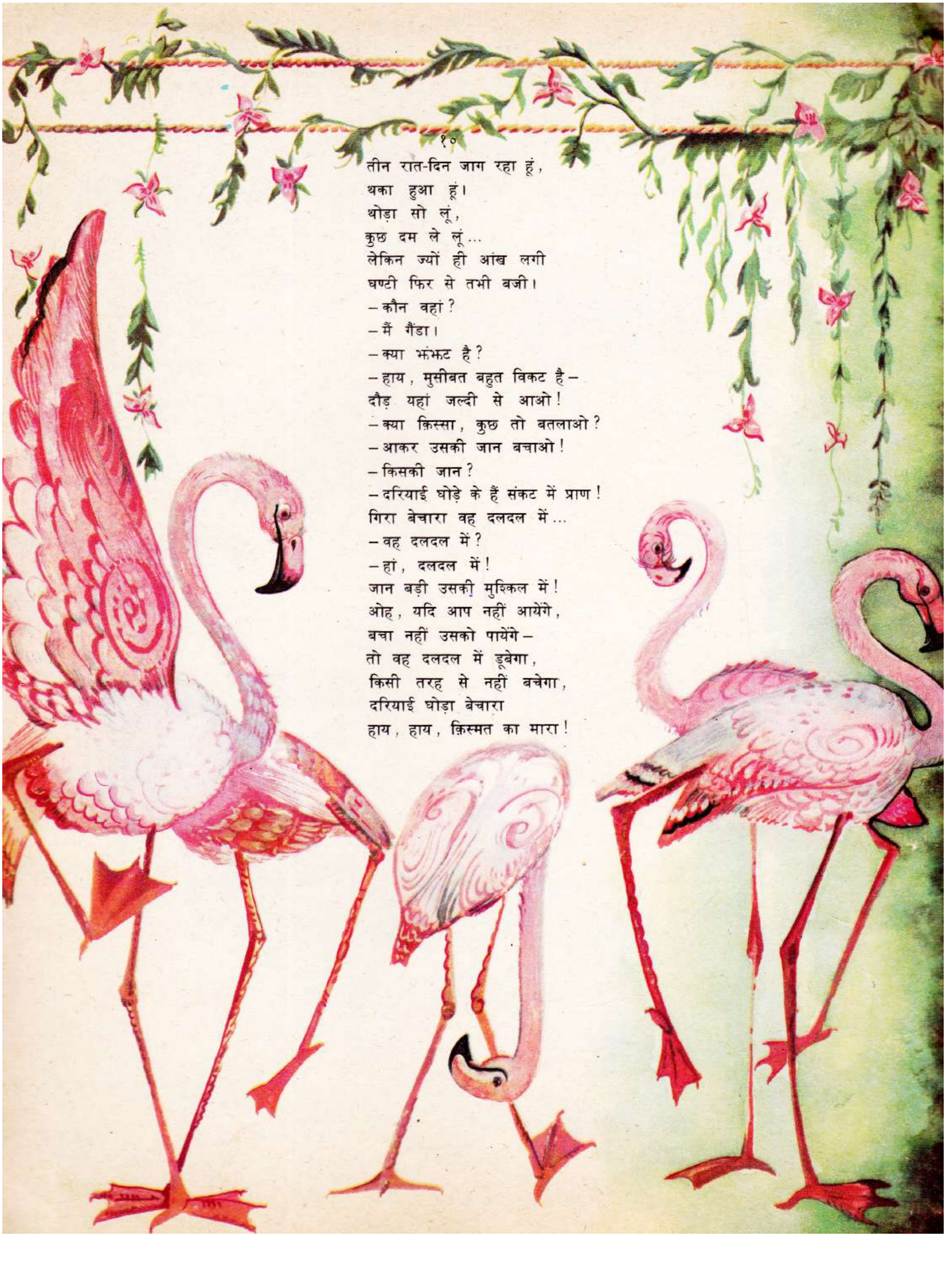
कैसे बुद्धू, कैसे भोले!

६

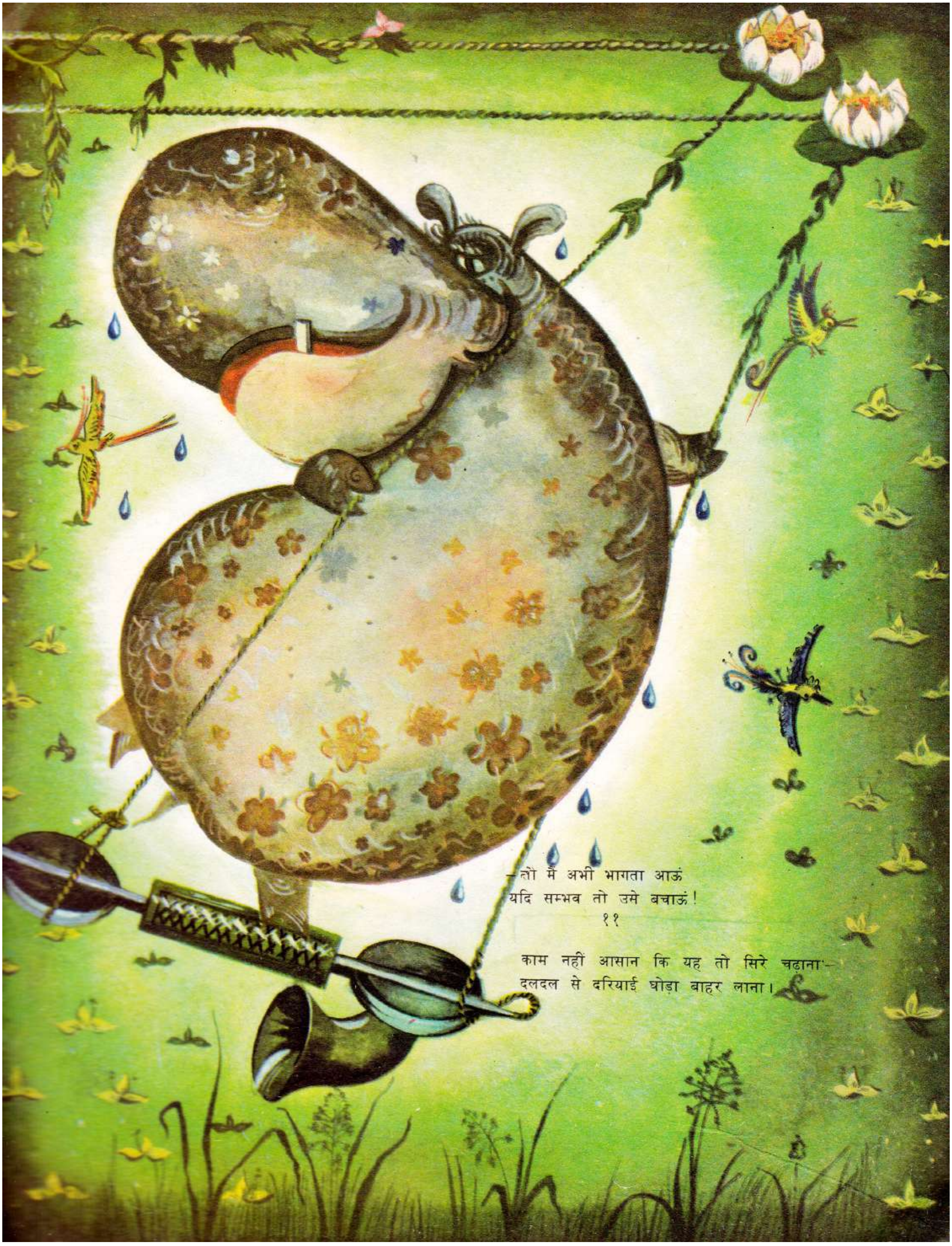
कल तड़के-तड़के कंगारू
व्यर्थ बहस पर हुआ उतारू,
बोला: –यह किसका है क्वार्टर?
हायदर्द, रहता है डाक्टर?
मैं झल्लाया, मैं चिल्लाया:
–किसी और का है यह क्वार्टर!
–कहां हायदर्द है, डाक्टर?
–इसका मुझको नहीं पता...
पूछ-ताछ का नम्बर देगा तुम्हें बता।







तीन रात-दिन जाग रहा हूं,
थका हुआ हूं।
थोड़ा सो लूं,
कुछ दम ले लूं...
लेकिन ज्यों ही आंख लगी
घण्टी फिर से तभी बजी।
– कौन वहां?
– मैं गैंडा।
– क्या झंझट है?
– हाय, मुसीबत बहुत विकट है –
दौड़ यहां जल्दी से आओ!
– क्या क़िस्सा, कुछ तो बतलाओ?
– आकर उसकी जान बचाओ!
– किसकी जान?
– दरियाई घोड़े के हैं संकट में प्राण!
गिरा बेचारा वह दलदल में...
– वह दलदल में?
– हां, दलदल में!
जान बड़ी उसकी मुश्किल में!
ओह, यदि आप नहीं आयेंगे,
बचा नहीं उसको पायेंगे –
तो वह दलदल में डूबेगा,
किसी तरह से नहीं बचेगा,
दरियाई घोड़ा बेचारा
हाय, हाय, क़िस्मत का मारा!



—तो मैं अभी भागता आऊं
यदि सम्भव तो उसे बचाऊं!

११

काम नहीं आसान कि यह तो सिरे चढ़ाना—
दलदल से दरियाई घोड़ा बाहर लाना।



हायदर्द

१

डॉक्टर हायदर्दजी प्यारे !
बन में बैठे पेड़ सहारे।
पशु-पक्षी सब रोते आयें,
किन्तु स्वस्थ, हंसते घर जायें।
गाय, रीछ, खरगोश, भेड़िया,
हिरन, कीट, कुत्ता औ' चिड़िया।

सबके सब अच्छे हो जायें,
हायदर्द के वे गुण गायें !

२

अरे, लोमड़ी रोती आई:
"बर्रे ने काटा !" चिल्लाई।

है कुत्ते का दर्दीला स्वर:
"भागी मुर्गी चोंच मार कर !"
उई-उई करके चिल्लाई:

खरगोशनिया भागी आई,



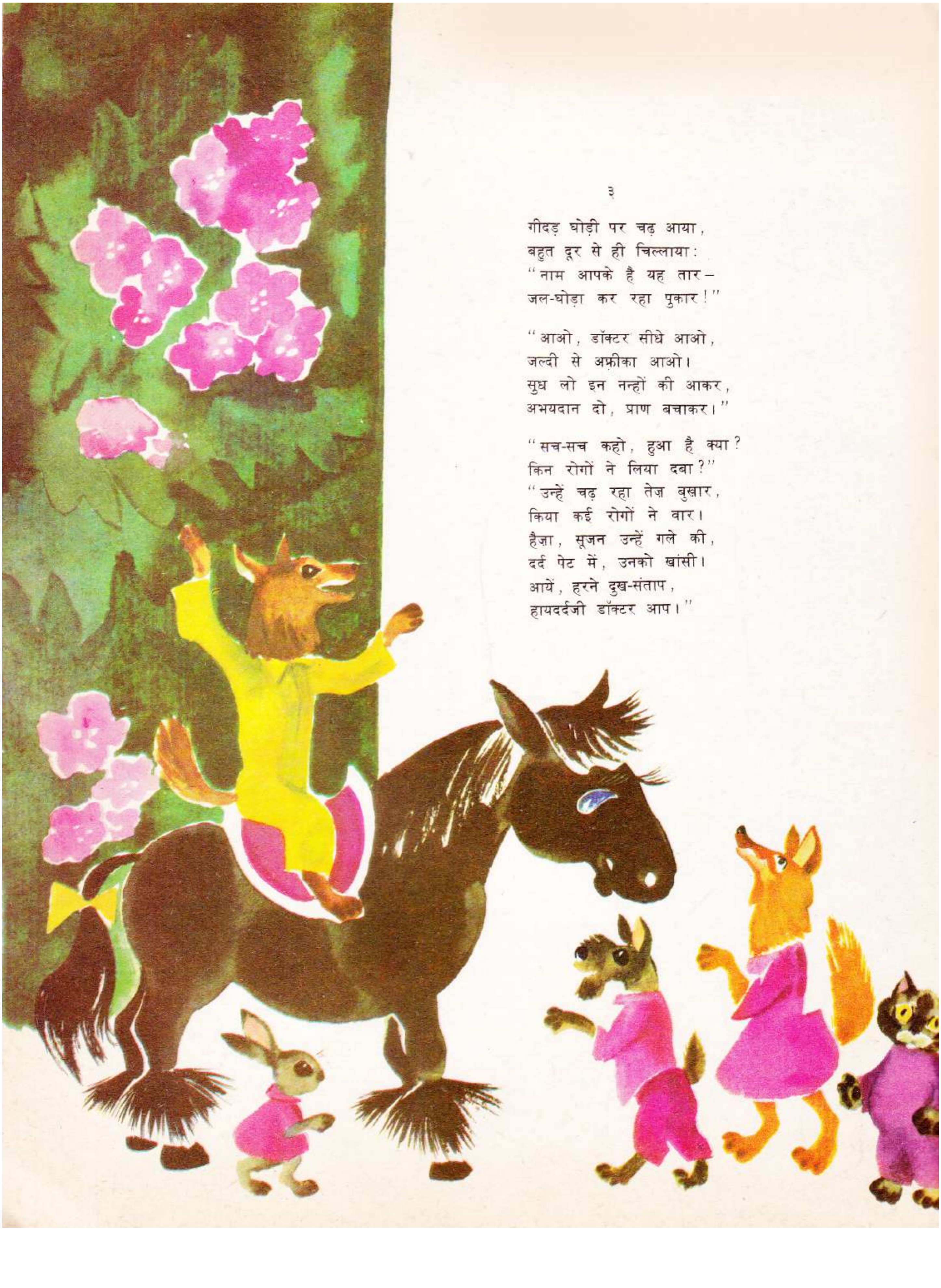
"मेरा मुन्ना, राम दुहाई!
ट्राम तले आया है भाई!
हाय! ट्राम से जा टकराया
मेरा छुटकनवा मन-भाया!

सड़क पार करने को भागा,
पैर कट गये, वह हतभागा!
हाय, हाय रे! नन्हा प्यारा –
हायदर्द ही एक सहारा।"

डॉक्टर बोले: "मत घबराओ!
उसे पास मेरे ले आओ।
मैं सी दूंगा पांव नये –
वह भागे, कूदे फिर से।"

उसे उठाकर वे ले आये
पीला मुख, वह तो लंगड़ाये।
डॉक्टर ने सी डाले पैर,
वह तो करने निकला सैर!

संग चल रही उसकी मैया,
नाचे खुश हो, ता-ता-थैया।
हंसे और ले रही बलैया:
"धन्य धन्य हे डॉक्टर भैया!"



३

गीदड़ घोड़ी पर चढ़ आया,
बहुत दूर से ही चिल्लाया :
"नाम आपके है यह तार –
जल-घोड़ा कर रहा पुकार!"

"आओ, डॉक्टर सीधे आओ,
जल्दी से अफ़्रीका आओ।
सुध लो इन नन्हों की आकर,
अभयदान दो, प्राण बचाकर।"

"सच-सच कहो, हुआ है क्या?
किन रोगों ने लिया दबा?"
"उन्हें चढ़ रहा तेज़ बुख़ार,
किया कई रोगों ने वार।
हैज़ा, सूजन उन्हें गले की,
दर्द पेट में, उनको खांसी।
आयें, हरने दुख-संताप,
हायदर्दजी डॉक्टर आप।"

"अच्छा, अच्छा, मैं आ जाऊं,
मुक्ति रोग से मैं दिलवाऊं।
तुम जल्दी से पता बताओ,
दलदल या पर्वत, समझाओ।"
"हम रहते हैं जांज़ीबार,
बस, कलहारी के उस पार।
पर्वत पर फ़रनंदा-पो
रहें वहीं दरियाई-पो
नदी जहां है लिमपो-पो।"



४

उठे, चल दिये हायदर्दजी,
दौड़ रहे हैं हायदर्दजी।
पर्वत, दलदल लांघ चले वे
गाते जायें, लगें भले वे:
"लिमपोपो, भई, लिमपोपो!"

मुख पर हवा, बर्फ़ की मार
"लौटो! लौटो!" कहें पुकार,
गिरे बर्फ़ पर मुंह के बल,
था आगे चलना मुश्किल!





कई भेड़िये भागे आये रोयेंदार
तभी अचानक वन के पार:
"आओ, बैठो जी हम पर,
लिवा चलें, बिजली बन कर!"
उड़े भेड़िये पर वे जायें,
बार-बार यह ही दुहरायें –
"लिमपोपो, भई, लिमपोपो!"



५

किन्तु आ गया सम्मुख सागर,
दिल दहलाये तूफ़ानी स्वर!
लहरें ऊंची-ऊंची उठतीं,
हायदर्द को अभी निगलतीं!

"अरे, डूब यदि मैं जाऊंगा!
यदि लहरों में बह जाऊंगा!
क्या होगा उन बीमारों का,
मेरे वनपशु बेचारों का?"

ह्वेल इसी क्षण आई तट पर,
बोली: "मुझ पर बैठो जम कर,
मैं जहाज़ बन ले जाऊंगी!
पार तुम्हें मैं पहुंचाऊंगी!"

हायदर्दजी जमे ह्वेल पर,
सिर्फ़ सुनाई देता यह स्वर:
"लिमपोपो, भई, लिमपोपो!"



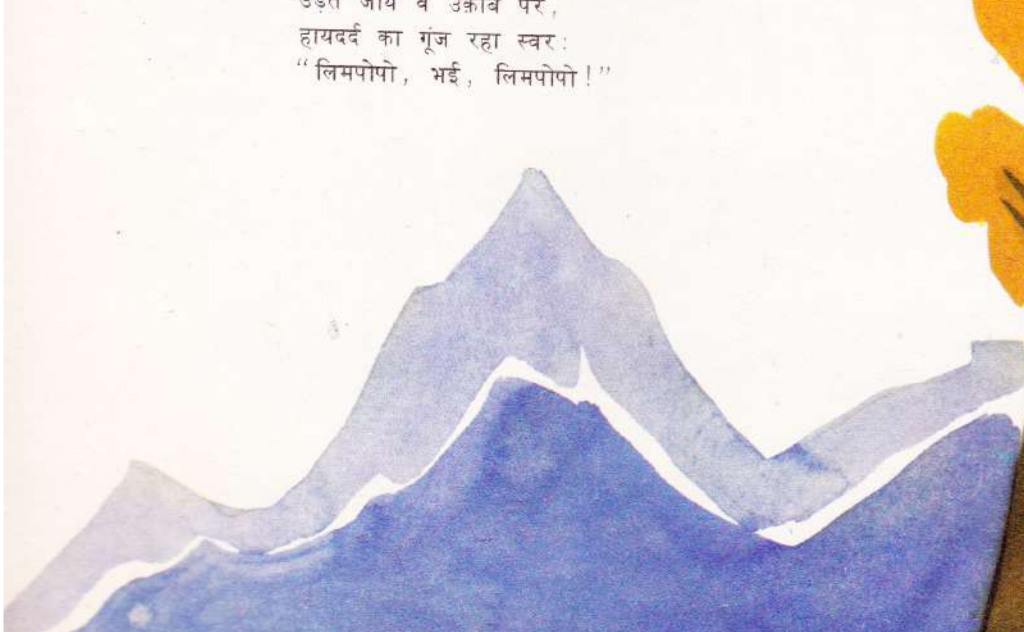
६

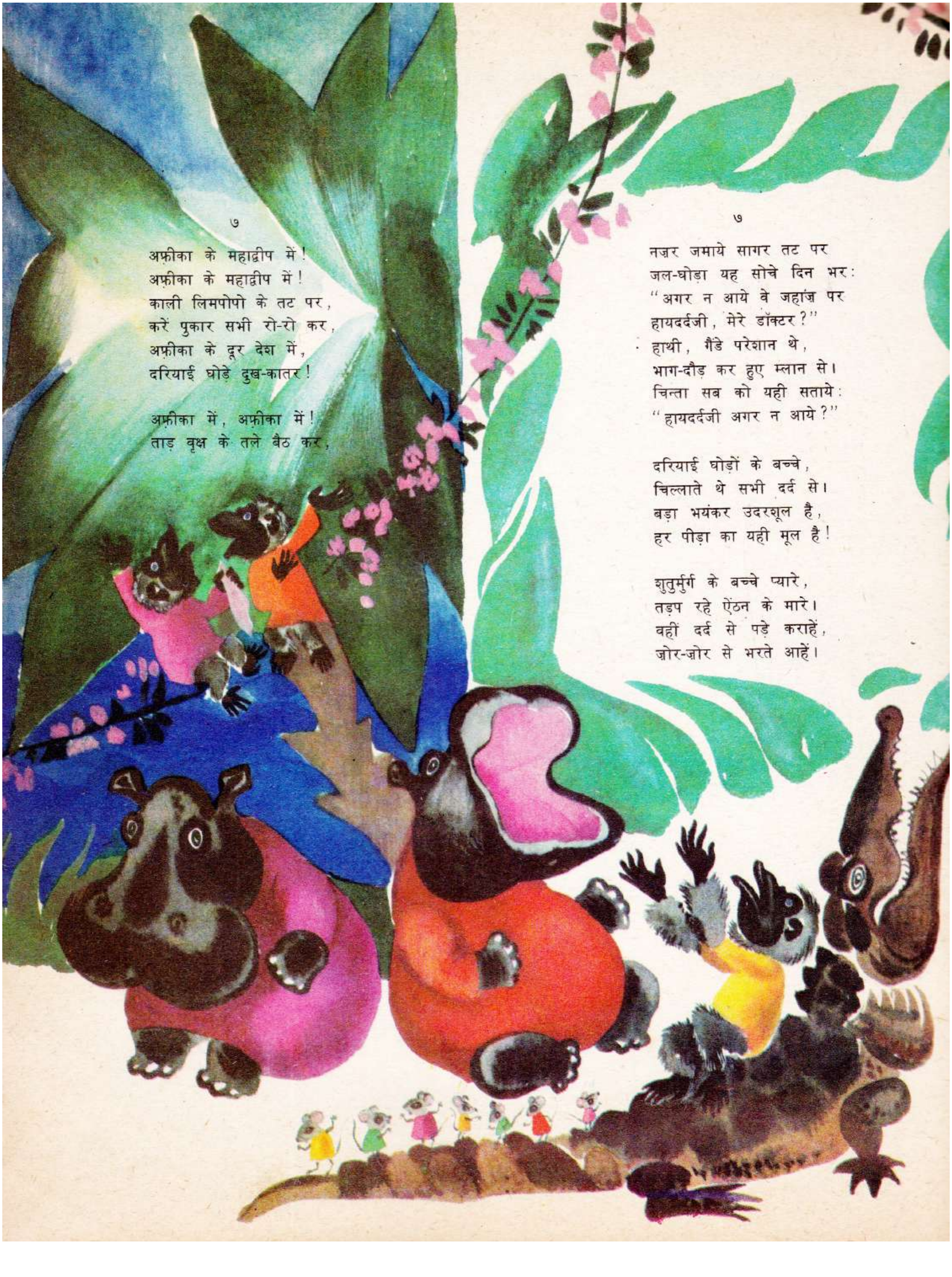
तभी राह में पर्वत आये,
खड़े हुए थे शीश उठाये।
नभ को छूते शृंग-शिखर
लगे रेंगने वे उन पर।
"पहुंच न पाऊं, अरे, अगर!
गिरूं राह में, जाऊं मर!
क्या होगा उन बीमारों का,
मेरे वनपशु बेचारों का?"

लो, उक़ाब उड़ सम्मुख आये,
बड़े-बड़े वे पर फैलाये:
"हायदर्दजी, बैठो हम पर,
ले जायेंगी बिजली बन कर!"

उड़ते जायें वे उक़ाब पर,
हायदर्द का गूंज रहा स्वर:
"लिमपोपो, भई, लिमपोपो!"







७

अफ़्रीका के महाद्वीप में !
अफ़्रीका के महाद्वीप में !
काली लिमपोपो के तट पर,
करें पुकार सभी रो-रो कर,
अफ़्रीका के दूर देश में,
दरियाई घोड़े दुख-कातर !

अफ़्रीका में, अफ़्रीका में !
ताड़ वृक्ष के तले बैठ कर,

७

नज़र जमाये सागर तट पर
जल-घोड़ा यह सोचे दिन भर:
"अगर न आये वे जहाज़ पर
हायदर्दजी, मेरे डॉक्टर?"
हाथी, गैंडे परेशान थे,
भाग-दौड़ कर हुए म्लान से।
चिन्ता सब को यही सताये:
"हायदर्दजी अगर न आये?"

दरियाई घोड़ों के बच्चे,
चिल्लाते थे सभी दर्द से।
बड़ा भयंकर उदरशूल है,
हर पीड़ा का यही मूल है !

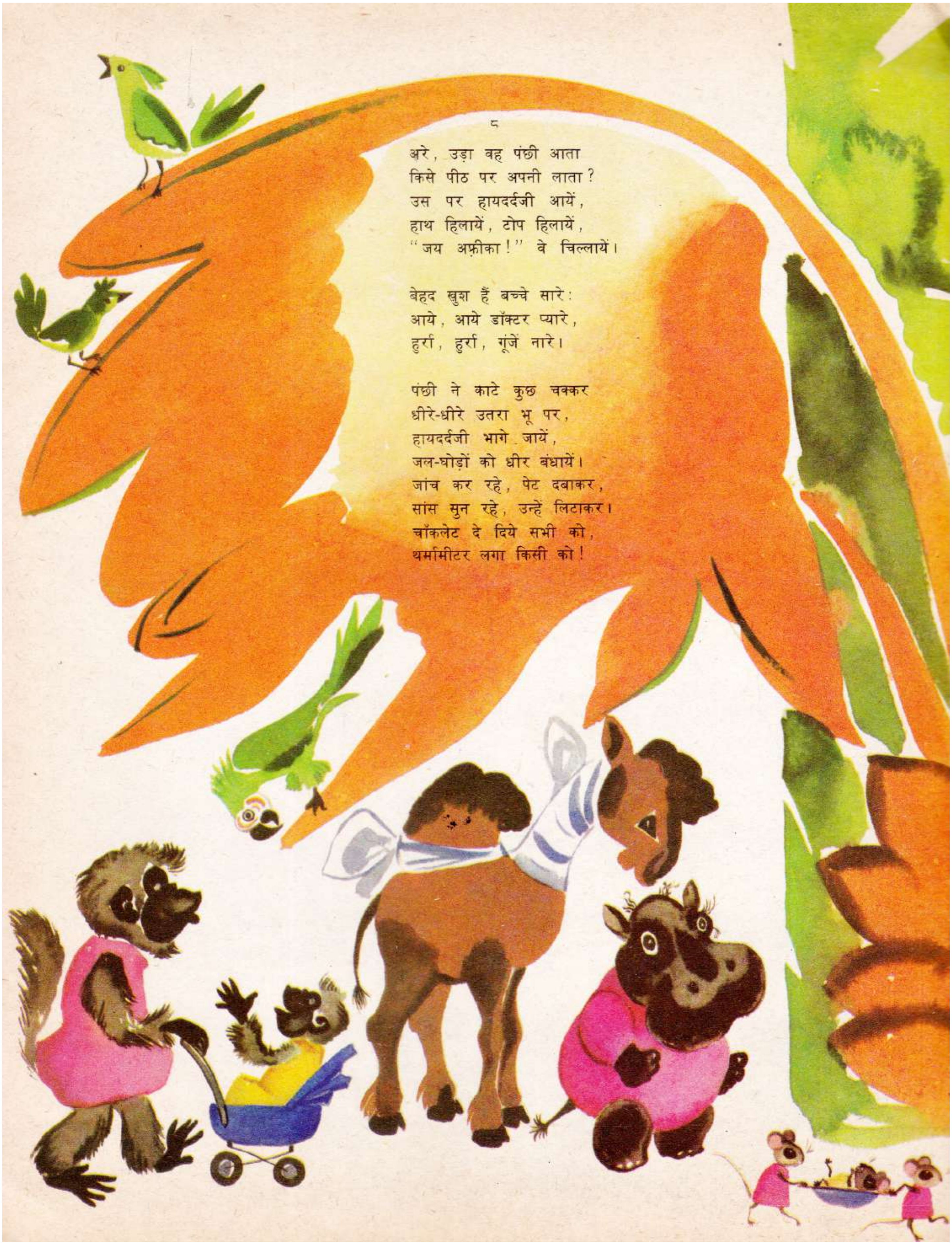
शुतुर्मुर्ग के बच्चे प्यारे,
तड़प रहे ऐंठन के मारे।
वहीं दर्द से पड़े कराहें,
ज़ोर-ज़ोर से भरते आहें।

उनको ख़सरा, छोटी माता,
चेचक का डर उन्हें सताता,
फटा दर्द से सिर है जाता,
कष्ट गले का उन्हें रुलाता।
पड़े हुए सब, दुख से क़ातर
सोच रहे सब यह रह रहकर:
"कब आयेंगे वे तो आख़िर
हायदर्दजी, अपने डॉक्टर?"

पास पड़ी है मछली शार्क
दांतोंवाली मछली शार्क,
दांतोंवाली मछली शार्क,
धूप सेंकती मछली शार्क।
हाय, हाय रे! उसके प्यारे,
तड़प रहे हैं बच्चे सारे।
बारह दिन से दांत दर्द से
रोते जायें, दुख के मारे।

और वहीं टिड्डा बेचारा
जो है कमर दर्द का मारा,
उससे तो अब चला न जाये
किसको अपनी व्यथा बताये?
ज़ोर-ज़ोर से आह भर रहा,
पड़ा रो रहा, हाय! मर रहा:
"अरे, कहां हो अच्छे डॉक्टर?
कब आओगे, प्यारे डॉक्टर?"





अरे, उड़ा वह पंछी आता
किसे पीठ पर अपनी लाता ?
उस पर हायदर्दजी आयें,
हाथ हिलायें, टोप हिलायें,
"जय अफ़्रीका!" वे चिल्लायें।

बेहद ख़ुश हैं बच्चे सारे :
आये, आये डॉक्टर प्यारे,
हुर्रा, हुर्रा, गूंजें नारे।

पंछी ने काटे कुछ चक्कर
धीरे-धीरे उतरा भू पर,
हायदर्दजी भागे जायें,
जल-घोड़ों को धीर बंधायें।
जांच कर रहे, पेट दबाकर,
सांस सुन रहे, उन्हें लिटाकर।
चॉकलेट दे दिये सभी को,
थर्मामीटर लगा किसी को!



जांचा तभी बाघ-बच्चों को,
देखा फिर बन्दर-शिशुओं को।
नन्हे ऊंटों की चिन्ता की,
मीठी उनको दवा पिला दी।
दूध पिलायें, शहद चटायें,
दूध-शहद से रोग मिटायें।
दस दिन-रात काम ही काम
खाना-पीना, नींद हराम।
डॉक्टर को कैसा विश्राम!
सेवा करते हैं अविराम,
ऊंचा है डॉक्टर का नाम,
भागे खांसी और जुकाम।

६

किया सभी को है अब अच्छा,
लिमपोपो, भई, लिमपोपो!
बूढ़ा हो या वह हो बच्चा,
लिमपोपो, भई, लिमपोपो!
चले सभी हंसते औ' गाते
लिमपोपो, भई, लिमपोपो!
खुश होते औ' शोर मचाते,
लिमपोपो, भई, लिमपोपो!



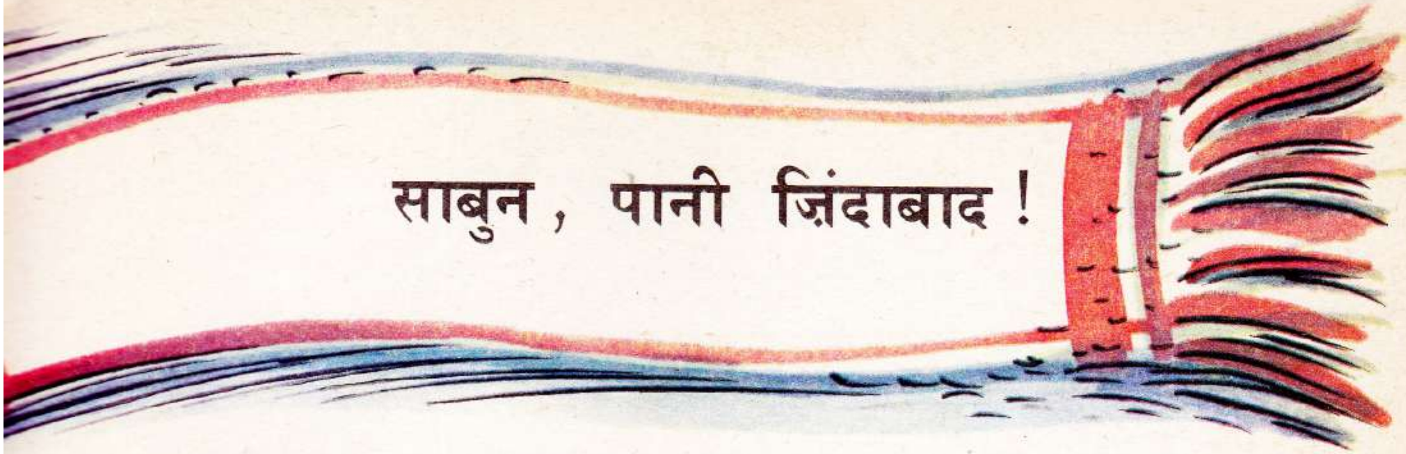
शार्क खुशी से नैन नचाये,
वह तो अब हंसती ही जाये।
नहीं खुशी से है मन भरता,
या कि गुदगुदी कोई करता!



दरियाई घोड़े के बच्चे,
वे भी सभी हुए हैं अच्छे।
ऐसे हंसते ख़ुश हो होकर,
जैसे झूम रहे हों तरुवर।

वह दरियादिल, वह दिलदार,
घोड़ा दरियाई सरदार।
दूर वहां से दौड़ा आया,
देश जहां है ज़ांज़ीबार।
किलिमंजारो से वह उतरा,
आज ख़ुशी से सुर भी निखरा:
"हायदर्दजी ज़िन्दाबाद !
अच्छे डॉक्टर ज़िन्दाबाद !"





साबुन, पानी ज़िंदाबाद!

भाग चला मेरा कम्बल
वह बिस्तर से गिरा उछल,
तकिया भी कूदा झटपट
मेढक-सा फुदका नटखट,
भागी तब मेरी चादर
सिर पर अपने पग धरकर,
मैं बत्ती की ओर बढ़ा
वह भी भागी मुझे चिढ़ा,
पुस्तक जब लेनी चाही
भाग चली वह भी, शैतान,
छिपी पलंग के नीचे जा
कौतुक देख हुआ हैरान,
पी लूं चाय, उठाये प्याला
समोवार की ओर बढ़ा,

वह तोंदल भी मुझे देखकर
भागा अपनी नाक चढ़ा।
यह सब क्या है?
क्या क़िस्सा है?
यह भगदड़
यह कैसी होड़?
सब कुछ घूम रहा चक्कर में
भाग रहे सब ताबड़-तोड़?
इस्तरियां जूतों के पीछे,
जूते भागें आंखें मीचे,
सभी खिलौने ऊपर-नीचे।
पेटी कहीं, किताबें घूमें
जैसे सभी नशे में झूमें।

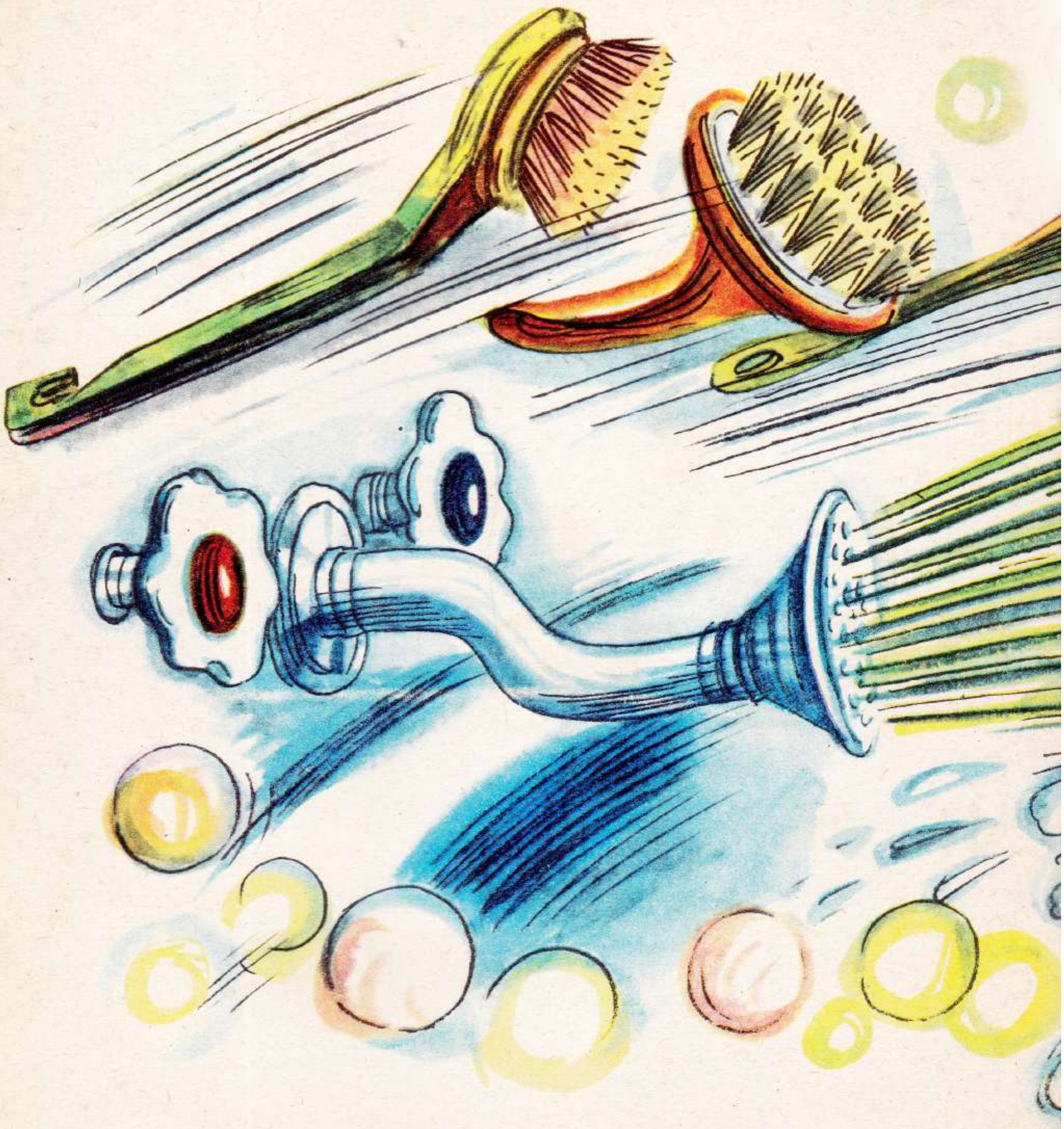


मां के सोने के कमरे से
तभी चिलमची भागी आई
लंगड़ी, टेढ़ी टांगों वाली,
उसने आकर डांट बताई:
"अरे दुष्ट, ओ गन्दे लड़के
शर्म न तुझको बिल्कुल आती,
तन पर ढेरों मैल चढ़ाये
तुम तो हो सूअर के साथी,
दर्पण में सूरत तो देखो –
गर्दन हुई मैल से काली,
जहां-तहां स्याही के धब्बे,
देह कि जैसे गंदी नाली,
हाथ कि दोनों काले-काले
गंदे-मंदे, कालिख वाले,
इसीलिये तो उन से डर कर,
भाग गया पतलून बिदक कर।



"पौ फटते चूहों के बच्चे
सभी हाथ-मुंह अपने धोते,
बिल्ली, बत्तख, चिड़िया, तोते
सभी लगाये जल में ग़ोते।
नहीं हाथ-मुंह जिसने धोया
ऐसे तुम ही एक अभागे,
इसीलिये मोजे औ' जूते
तुम से दूर-दूर हैं भागे।

"मैं तो सब से बड़ी चिलमची,
अन्य सभी की मैं सरदार,
'धो लो, धो लो' – नाम है मेरा
मेरे बल का वार न पार।
हुक्म सुनें, चिलमचियां भागें
स्पंज इशारा मेरा मानें,
मेरे पैर पटकते ही वे
आयें, आकर सीना तानें,
पैर पटक तुझ को धमकायें,
डांटे-डपटें, शोर मचायें,
तुझ को, गंदे सिर वाले को
बदबू वाले, परनाले को
पकड़ नदी पर वे ले जायें,
वहां तुझे ग़ोते लगवायें।"
तांबे के टब पर तब उसने
बड़े ज़ोर से मुक्का मारा,
और कहा कुछ: "कारा-बारा"।



उसी समय ब्रश भागे आये,
मेढक-से टर्राते आये,
रगड़-रगड़ मुझको नहलायें
और साथ यह गाते जायें:

"हम इस गंदे-मंदे को
करते साफ़-साफ़;
तन निखरे, मुंह चमके इसका
करते साफ़-साफ़।"



साबुन की टिकिया झट आई,
उसने सिर पर धौल जमाई,
चुटकी काटे, फेन सताये
सुने न मेरी हाये-वाये।

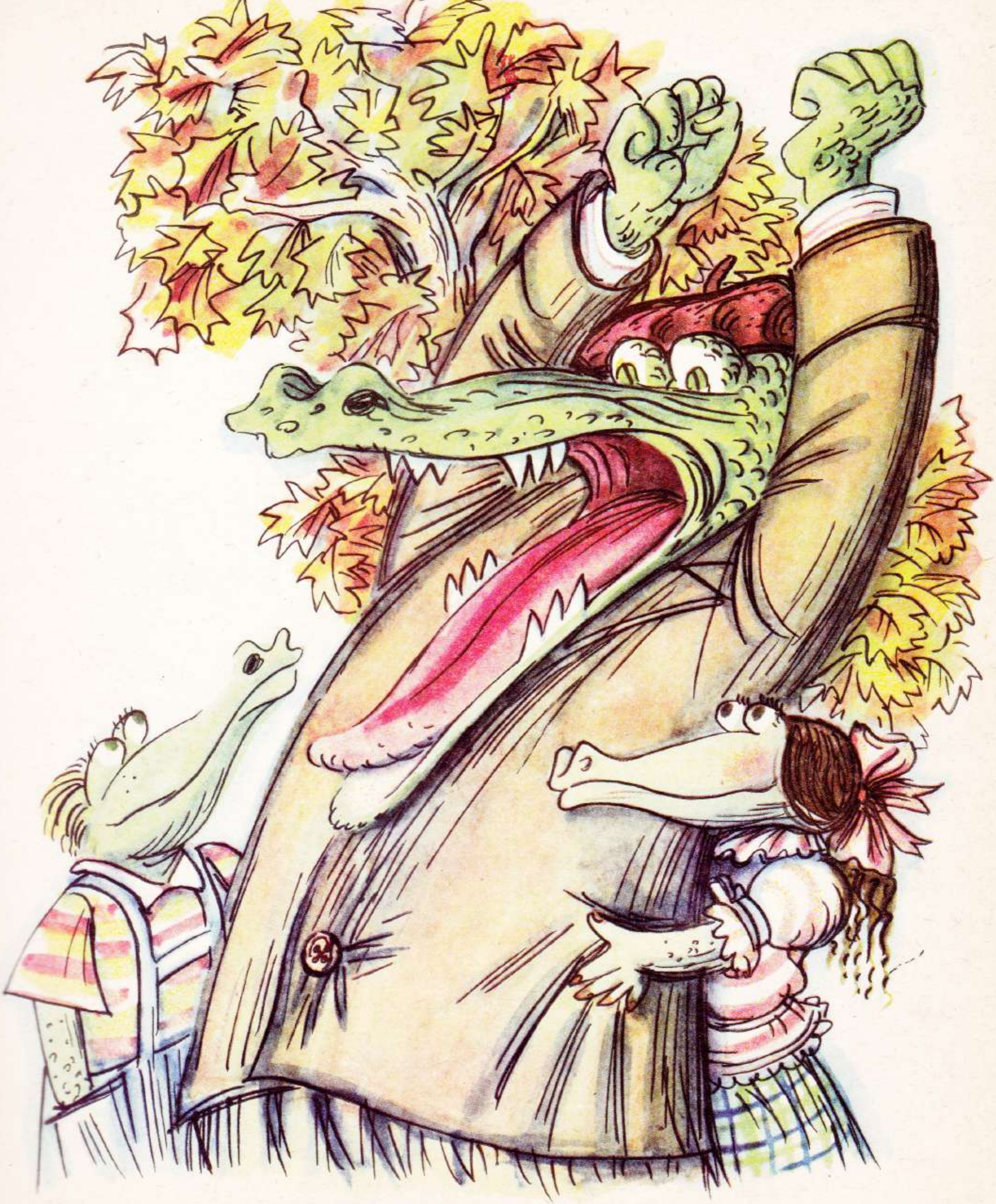
वह पागल, स्पंज मुस्टंडा
मुझे डराये, जैसे डंडा।
उस से डर कर भाग चला
पर वह ज़ालिम नहीं टला,

मैं दायें, तो वह दायें
मैं बायें, तो वह बायें,
लांघ गया मैं बाड़ मगर
झपटा वह फिर भी मुझ पर।

उसी समय घड़ियाल मित्र
वह मेरा प्यारा-प्यारा,
बच्चों के संग पड़ा दिखाई
उसने मुझे उबारा,
उसने झट स्पंज को निगला
वह हलवे-सा मुंह में पिघला,
फिर वह मुझे देख चिल्लाया
पैर पटकता भागा आया –
"जाओ, फ़ौरन, जाओ घर!"
वह बोला।
"मुंह को धोओ मल मल कर!"
वह बोला।
"वरना अक़्ल सिखाऊंगा!"
वह बोला।
"पीटूंगा, खा जाऊंगा!"



वह बोला।



भाग चला मैं तब सरपट
वापस आया घर झटपट,
मल मल साबुन
मल मल साबुन
बहुत देर तन साफ़ किया,
धब्बे धोये,
स्याही धोयी,
मुंह का मैल उतार दिया।
अब पतलून भागता आया—
"पहनो मुझको," वह चिल्लाया,

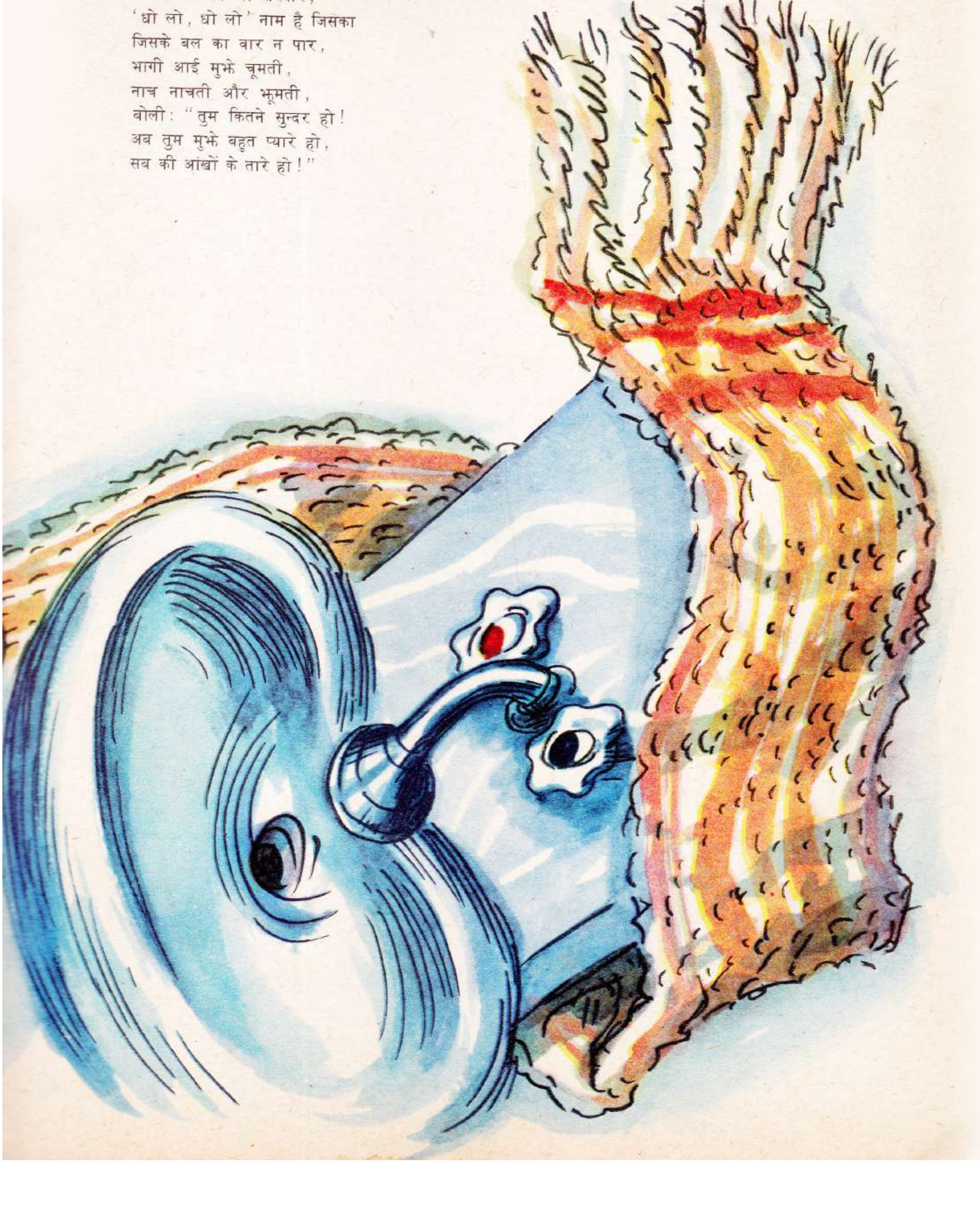
तभी समोसा बोला आकर:
"मुंह में रख लो मुझे उठाकर।"

नारंगी भी दौड़ी आई,
सीधे मुंह के बीच समाई,

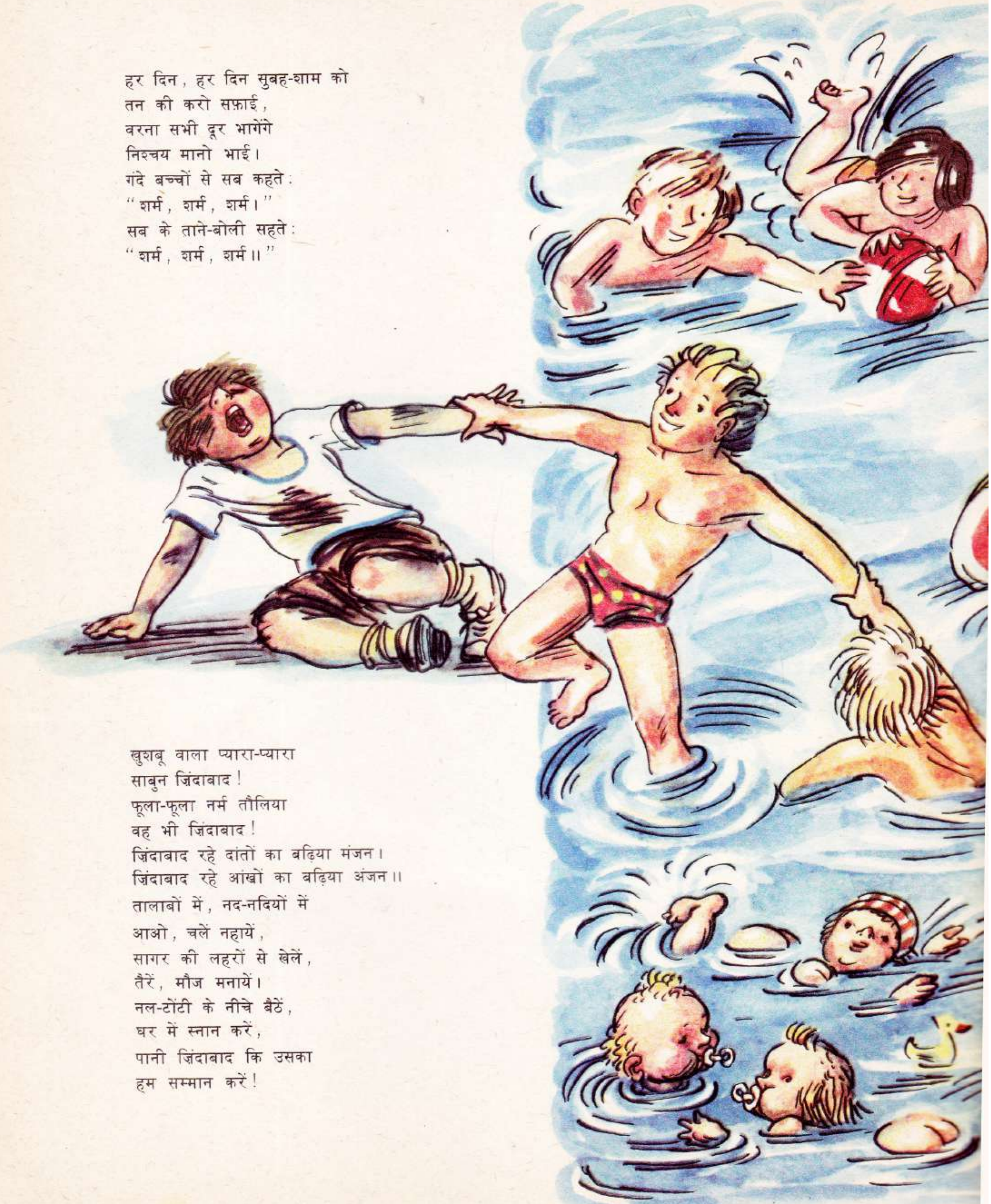
लौटी अब पुस्तक भी मेरी
कापी भी आई वापस,
गणित, व्याकरण झूमे खुश हो
नाच उठे दोनों बरबस।



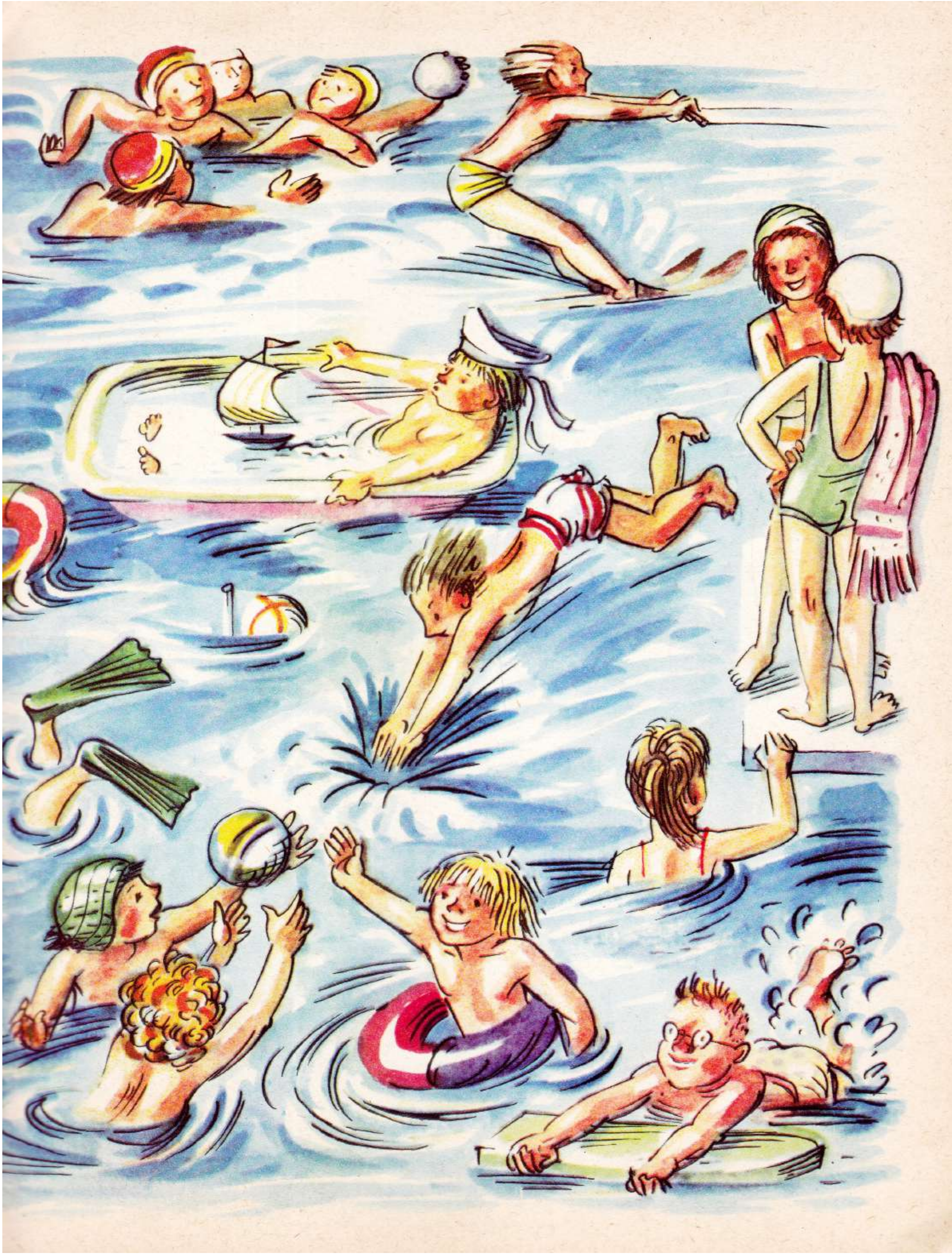
इसी समय वह बड़ी चिलमची
अन्य सभी की जो सरदार,
'धो लो, धो लो' नाम है जिसका
जिसके बल का वार न पार,
भागी आई मुझे चूमती,
नाच नाचती और झूमती,
बोली: "तुम कितने सुन्दर हो!
अब तुम मुझे बहुत प्यारे हो,
सब की आंखों के तारे हो!"



हर दिन, हर दिन सुबह-शाम को
तन की करो सफ़ाई,
वरना सभी दूर भागेंगे
निश्चय मानो भाई।
गंदे बच्चों से सब कहते:
"शर्म, शर्म, शर्म।"
सब के ताने-बोली सहते:
"शर्म, शर्म, शर्म।।"



खुशबू वाला प्यारा-प्यारा
साबुन ज़िंदाबाद!
फूला-फूला नर्म तौलिया
वह भी ज़िंदाबाद!
ज़िंदाबाद रहे दांतों का बढ़िया मंजन।
ज़िंदाबाद रहे आंखों का बढ़िया अंजन।।
तालाबों में, नद-नदियों में
आओ, चलें नहायें,
सागर की लहरों से खेलें,
तैरें, मौज मनायें।
नल-टोंटी के नीचे बैठें,
घर में स्नान करें,
पानी ज़िंदाबाद कि उसका
हम सम्मान करें!



सूरज की चोरी

सूरज नभ में तैर रहा था,
बादल ने आ ढांप लिया,
खिड़की से झांका खरहे ने –
अंधकार ने डरा दिया।

चिड़ियां काली, चिड़ियां काली
पर वे उजले पंखों वाली,
वे खेतों में जा चिल्लाई:
"सारस, सारस, राम दुहाई,
मगरमच्छ ने ग़ज़ब किया,
वह सूरज को निगल गया!"

छाया-छाया घोर अंधेरा –
घर में ही अब सब का डेरा।
जो भी घर से बाहर आये
वह पथ भूले, गुम हो जाये।

रो, रो चिड़ियां शोर मचायें:
"निकलो सूरज, तुम्हें बुलायें,
बिना तुम्हारे हम क्या खायें –
दाने-दुनके नज़र न आयें!"

खरहे मैदानों में भटके
दूर, रास्तों में ही अटके,
केवल फूली आंखों वाले
झींगे नाचें हो मत वाले,
पर्वत के पीछे गड्ढों में
दीवानी-सी गूंज रही थी,
हूक भेड़ियों की खड्डों में।









सुबह-सुबह दो भेड़ें आईं
दोनों ने यह टेर लगाई :
"निकल जानवर, बाहर आओ,
मगरमच्छ से तुम भिड़ जाओ,
सूरज फिर से नभ में आये,
मगरमच्छ से वह बच जाये!"

पर उनका तो दम निकले :
"उस से कौन मोर्चा ले,
बड़ा भयानक, दांत बड़े।
उस से कैसे, कौन लड़े!"

तब वे भागे-भागे आये,
भालू के घर जा चिल्लाये :
"अरे निकल अब बाहर आओ,
तुम सूरज की जान बचाओ,
चूस चुके पंजा, अब छोड़ो,
अरे आलसी, तन्द्रा तोड़ो!"



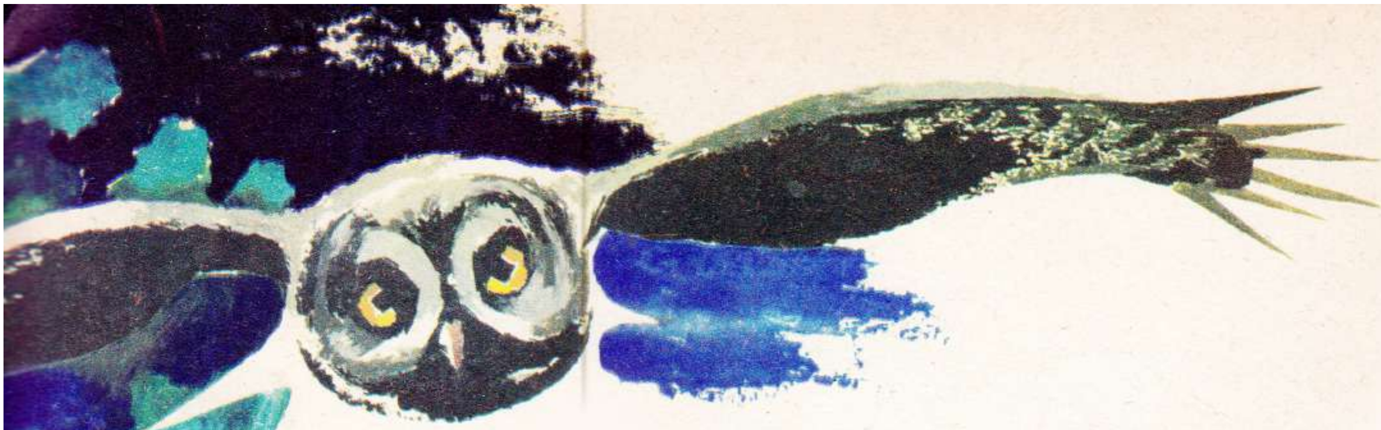
किन्तु न भालू लड़ना चाहे
दलदल में यों आये-जाये,
वह रोये, औ' वह चिल्लाये,
बच्चों को वह पास बुलाये:
"कहां जा मरे, रे तुम सारे?
बूढ़ा ढूंढ़े, तुम्हें पुकारे।"

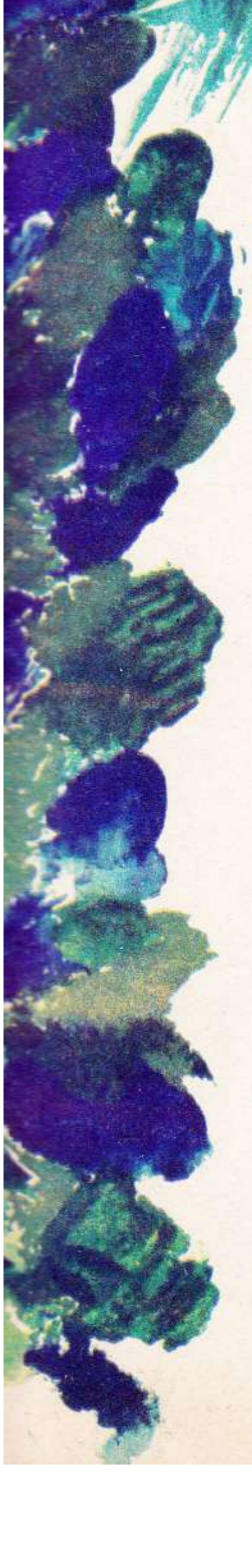
मादा भी हैरान फिर रही:
"कहां गये तुम, कहां गये रे?
या खाई में कहीं जा गिरे?
या पागल कुत्तों ने आकर
चीरा तुम्हें अंधेरा पाकर?"

भटकी वह जंगल में दिन भर
मिले न बच्चे उसे कहीं पर,
वृक्षों से काले उल्लू बस
उसे देखते जाते बरबस।









इधर एक खरहे ने आकर
भालू से यह कहा सुनाकर–
"शर्म करो, तुम भी रोते हो
खरहा नहीं, रीछ होते हो,
टेढ़ी टांगों वाले जाकर,
मगरमच्छ को मजा चखाकर
टुकड़े उसके तुम कर डालो,
उसके मुंह से सूर्य निकालो।
आसमान् में वह फिर जाकर
चमक उठेगा ज्योति जलाकर।

"बच्चे तेरे तब झबरीले
मोटे पंजे वाले, ढीले,
खुद ही घर भागे आयेंगे
नमस्कार, सब चिल्लायेंगे।"

भालू तब हुंकारा,
गुस्से से फुंकारा,
बड़ी नदी की ओर क्रोध से
भागा बन अंगारा,
पहुंचा जब वह बड़ी नदी पर
देखा वहां अजब ही चक्कर –





मगरमच्छ डोले लहरों पर,
मुंह में आग नहीं, सूरज भर,
लाल-लाल था, सुन्दर काया
मगरमच्छ ने जिसे चुराया।

दबे पांव भालू ने आकर,
सिर पर हल्की चोट लगाकर
कहा उसे: "सुन रे शैतान,
दे सूरज, यदि प्यारी जान,
वरना देख, पकड़ मैं लूंगा,
तेरे टुकड़े मैं कर दूंगा।
बुद्धू आये अक्ल ठिकाने
सूर्य चुराने के क्या माने!
घिरा अंधेरा, खोई राह
तुम को नहीं तनिक परवाह!"

मगर बेहया हंसा ठठाकर
पेड़ हिले सब ही थर्राकर:
"केवल यदि मैं ऐसा चाहूं
हड़प चांद को भी झट जाऊं!"

गुस्से में तब भालू आया
वह हुंकारा, वह चिल्लाया,
झपट पड़ा वह दुश्मन पर,
वार किये उसने तन कर,
कड़ी पिटाई उसकी की,
याद दिलाई नानी की:
"लाओ, तो सूरज लाओ,
झटपट उसको लौटाओ!"

मगरमच्छ का दिल कांपा
उसने हालत को भांपा,
वह रोया, औ' चिल्लाया
आंखों से पानी आया,
सूरज तब निकला मुंह से
उसके लम्बे दांतों से,
चला गगन में वह बढ़ता
वह ऊंचा-ऊंचा चढ़ता,





उठा झाड़ियों से ऊपर,
भोज वृक्षों से ऊपर।



नमस्कार, सूरज तुझको!
नमस्कार नीले नभ को!





पक्षी सब चहके मिलकर
नीड़ों से आये बाहर,
खरहों ने भी खुशी मनाई,
उछले-कूदे, दौड़ लगाई।

भालू के बच्चे देखो
भागे जाते हैं कैसे,
बिल्ली के बच्चों जैसे।
वे मोटे पंजों वाले,
सब खुश होकर मत वाले:
"दादा, हम सब घर आये!
नमस्कार है!" चिल्लाये।
गिलहरियां भी, खरहे खुश हैं,
खुश बालायें, लड़के खुश हैं,
भालू को सब चूम रहे हैं,
सभी मचा यह घूम रहे हैं:
"धन्यवाद है दादा तेरा,
तुम सूरज को वापस लाये
दूर भगाया घोर अंधेरा!"







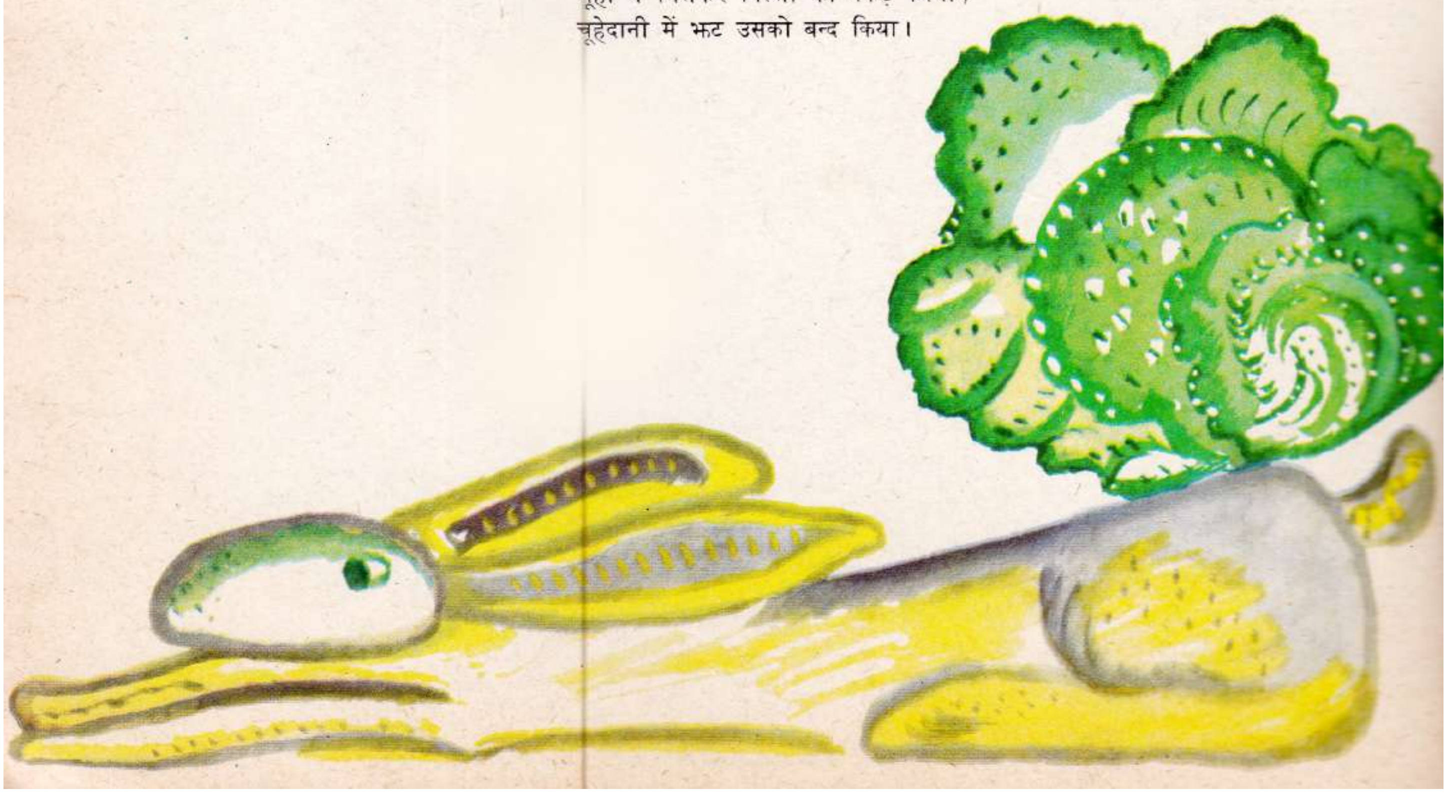
गडबड़-झाला

बिल्ली के बच्चे यह बोले :
– म्याऊं-म्याऊं करते हम तो ऊब गये,
सूअर के बच्चों की तरह करें ख़्रू-ख़्रू,
रंग हमारा खूब जमे !
बत्तख के बच्चे भी पीछे नहीं रहे :
– टें-टें करना और न हम भी अब चाहें।
यही चाहते हम मेढक की तरह सभी
ऊंचे-ऊंचे टर्रायें ॥
सूअर करते :
म्याऊं-म्याऊं।
और बिल्लियां :
ख़्रू-ख़्रू !
करें बत्तखें :
टर्र-टर्र !
और मुर्गियां :
टें-टें !
गौरैया भी तभी फुदकती जो आई,
बहुत ज़ोर से गाय सरीखी रम्भाई :
मा-मा !
और भागता भालू अगले क्षण आया,
ऊंचे-ऊंचे चिल्लाया :
कुक-ड़ूं-कूं !
डाली पर जो बैठी थी कोयल काली
वह बोली :
– नहीं करूंगी मैं कू-कू !
वह कुत्ते की तरह भूंकने लगी तभी :
भौं-भौं-भूं !

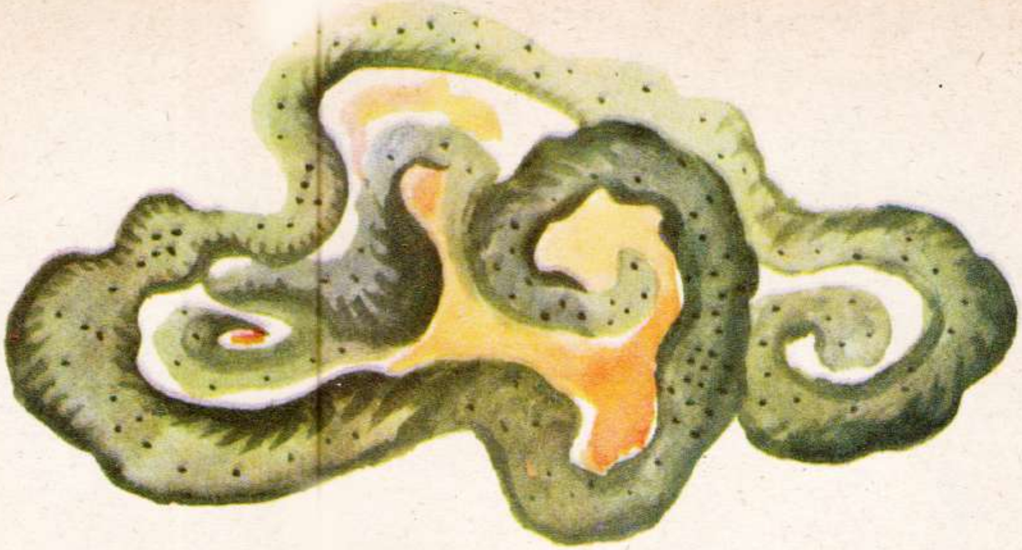




केवल नन्हा-सा खरगोश
रहा वही चुप, वह खामोश,
करे न वह म्याऊं-म्याऊं
और न बोले वह खू-खू –
पत्तागोभी के नीचे
लेटा था आंखें मीचे,
खरगोशों की वाणी में
वह कुछ कहता जाता था,
मूर्ख जानवरों को जैसे
बात यही समझाता था:
"जिसे बदा करना चीं-चीं
नहीं करे म्याऊं-म्याऊं,
और जिसे म्याऊं करना
नहीं करे वह तो चीं-चीं,
कौवा गाय न बन सकता,
मेढक कभी न उड़ सकता!
किन्तु जानवरों के बच्चे
मस्त, अक़्ल के वे कच्चे,
कब खरहे की बात सुनें
और शरारत अधिक करें,
खेतों में मीनें घूमें,
मेढक ऊंचे गगन उड़ें।
चूहों ने मिलकर बिल्ली को पकड़ लिया,
चूहेदानी में झट उसको बन्द किया।

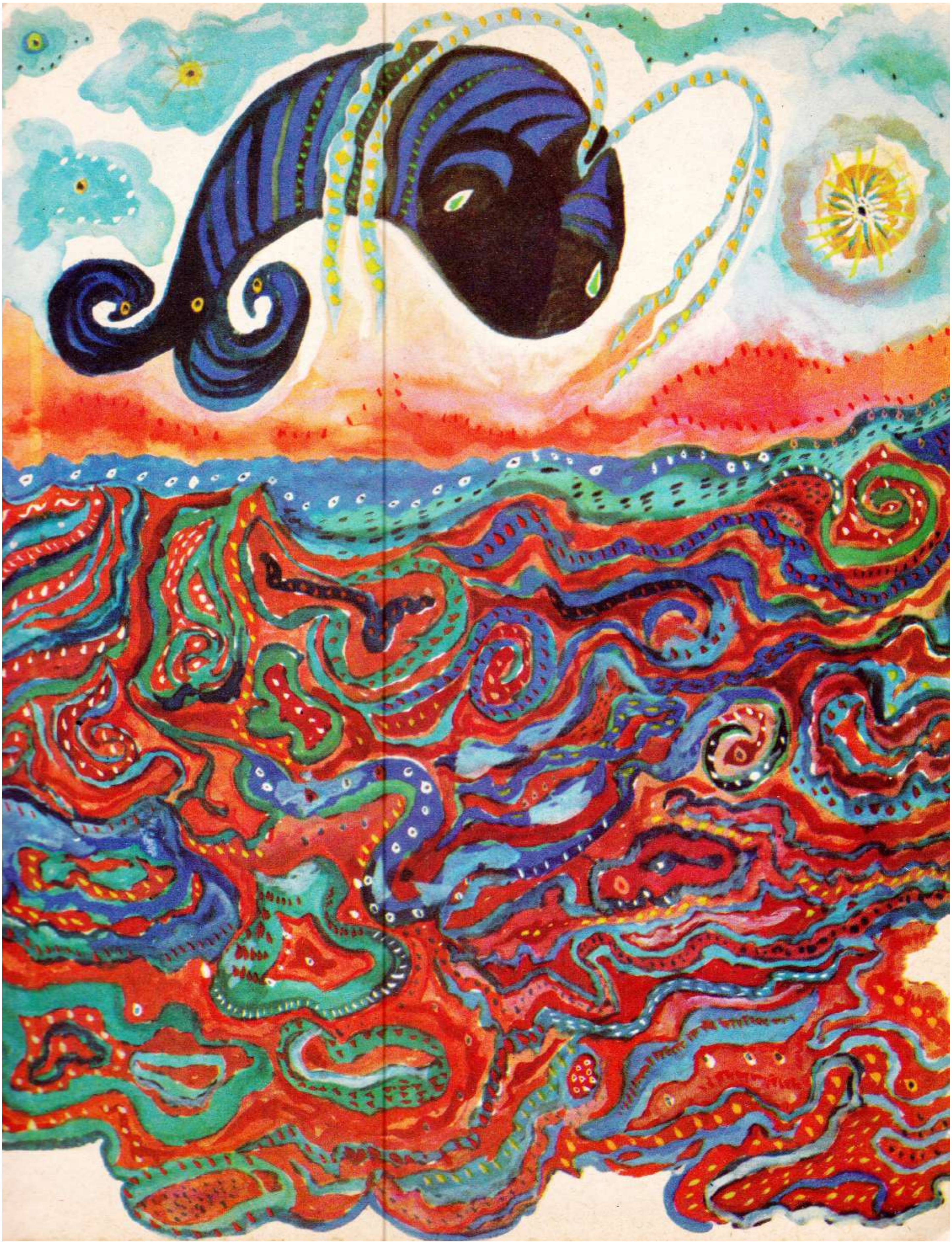






लोमड़ियां हो गयीं निडर
दियासलाई की डब्बी लेकर
पहुंचीं नीले सागर पर,
औ' सागर में आग लगाई।
अब ह्वेलों की शामत आई:
"आग बुझाने वाले तुम भागे आओ,
हमें बचाओ, हमें बचाओ!"







बहुत देर जूझा घड़ियाल,
आग बुझाये, वह बेहाल
सूखी खुमियां, पुए, कचौड़ी
उसमें डाल।
दो मुर्गियां भागती आयीं,
पानी के पीपे भर लायीं।
आईं दो कंटीली मीनें
गागर भर जल वहां उंडेलें।
मेढक आये सभी दौड़कर
डालें पानी वे टब भर भर।
आग बुझायें, आग बुझायें
नहीं सफलता लेकिन पायें।

तितली एक तभी जो आई,
करामात उसने दिखलाई,
पंख हिलाये, पंख हिलाये,
आग हर घड़ी बुझती जाये
और बुझ गयी।





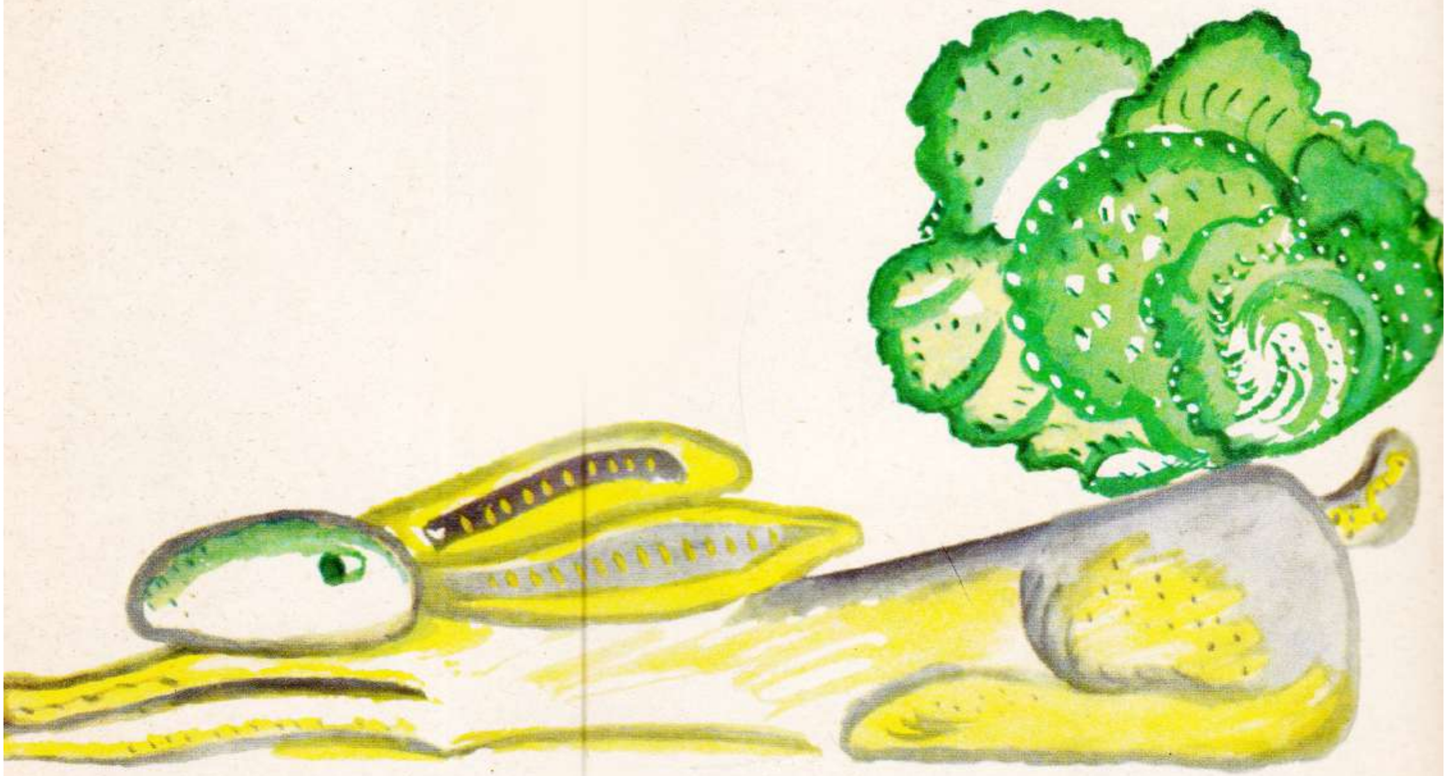
बहुत ख़ुश हुए सभी जानवर !
हंसें और गायें सब मिलकर,

कान हिलायें, पूंछ हिलायें,
उछलें-कूदें, पांव बजायें।
अपनी ही वाणी में फिर से
गो-गो-गो – कलहंस करें,
म्याऊं-म्याऊं करें बिल्लियां,
ख़ूब जोर से स्वर गूंजें।
करें परिंदे – चूं-चूं-चीं !
घोड़े करते – हिन-हिन-हिन !
और मक्खियां – भिन-भिन-भिन !
मेढक-मेढकियां टर्रायें,
बत्तख टें-टें शोर मचायें,
सूअर ख़्रू-ख़्रू स्वर गुंजायें।

मेरी बच्ची की ख़ातिर वे
मानो सब मिल लोरी गायें –
सो जा मेरी बिटिया प्यारी,
सो जा मेरी राज-दुलारी !







अजूबे ही अजूबे कोर्नेई चुकोव्स्की

